प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि कु.सविता पांडुरंग राऊत ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल्.(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध "नंददास के भँवरगीत की गोपियाँ" मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। कु.सविता पांडुरंग राऊत के प्रस्तुत शोध कार्य के बारेमें मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। संपूर्ण लघु शोध-प्रबन्ध को आरंभ से अंत तक पढकर ही मैं यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ।

30/5/92

प्राचार्य शरद कणाबरकर
शोध निर्देशक
हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

दिनांक :30:5:1992।

प्रख्यापन

मैंने `नंददासजी के भँवरगीत की गोपियाँ` लघु शोध-प्रबन्ध प्रा. शरद कणबरकरजी के निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए पूरा किया है। मेरा यह मौलिक शोध-कार्य है। यह लघु शोध-प्रबन्ध इस विश्वविद्यालय की या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए मैंने प्रस्तुत नहीं किया है।

Raut

प्रा. कु. सविता पांडुरंग राऊत
शोध-छात्रा

दिनांक : 30: 5 :१९९२।
कोल्हापुर।

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ क्रमांक
	-	प्राक्कथन	1 to 5
प्रथम अध्याय	-	नंददास व्यक्तित्व एवं कृतित्व	6 to 24
द्वितीय अध्याय	-	भ्रमरगीत परंपरा - परिचय	25 to 42
तृतीय अध्याय	-	नंददास का भँवरगीत - परिचय १) कथावस्तु २) दार्शनिक विचार ३) कला पक्ष	43 to 83
चतुर्थ अध्याय	-	नंददासजी के 'भँवरगीत' की गोपियाँ	84 to 155
पंचम अध्याय	-	उपसंहार	156 to 164
परिशिष्ट	-	१) नंददासजी की रचनाएँ २) संदर्भ ग्रंथ सूची ३) अन्य सहायक ग्रंथ सूची	165 to 168

प्राक्कथन

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हुए मेरा मन हिन्दी भक्ति साहित्य की ओर आकर्षित हुआ । भारतीय भक्ति साहित्य की परंपरा बहुत प्राचीन हैं । इसमें अनेकानेक श्रेष्ठ भक्त-कवि हो गये । इनमें नंददासजी का नाम विशेषा महत्वपूर्ण माना जाता हैं । हिन्दी साहित्य के लिए नंददासजी का योगदान अनमोल रहा हैं ।

नंददासजी मध्ययुग के एक अद्वितीय भक्त-कवि थे । व्रजभाषा पर उनका असामान्य अधिकार था । व्रजभाषा को निखारने का उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया हैं । इससे नंददासजी का भक्त के साथ-साथ कलाकार का रूप भी सामने आ जाता हैं । नंददासजी का `भँवरगीत` हिन्दी साहित्य की अमूल्य रचना हैं । इसमें उनका भक्ति से भरा कलाकार का रूप स्पष्ट निखर आया हैं । मार्मिक अभिव्यक्ति के कारण यह बहुत रमणीय बन गया हैं । उनका यह काव्य हमारे हृदय की भाव-भूमि को स्पर्श किये बिना नहीं रहता ।

अष्टछाप के कवि नंददास हमें बी.ए.भाग-३ की परीक्षा के लिए थे । उससमय हमने उनका थोडा-बहुत अध्ययन किया था । सिंहनद की क्षत्राणी के बारेमें सुनकर आश्चर्य लगा था । तब से नंददासजी के बारेमें अधिक जानने की इच्छा मेरे मन में उत्पन्न हुई थी और इसी इच्छा की पूर्ति का अवसर अब एम.फिल्. के बहाने लघु शोध-प्रबन्ध के रूप में प्राप्त हुआ । यह मौका प्राप्त होते ही मैंने " नंददासजी के भँवरगीत की गोपियाँ " इस विषाय पर कार्य करना निश्चित किया ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध की प्रारंभिक अवस्था में कुछ प्रश्न मन में उठ खडे हुए वे हैं --

१) नंददासजी का प्रामाणिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व क्या है ?

२) हिन्दी की साहित्य-परंपरा में भ्रमरगीत परंपरा का उद्भव तथा विकास कैसे हुआ ?

३) नंददासजी के `भँवरगीत` की कथावस्तु क्या है ? उन्होंने अपने दार्शनिक विचारों का विवेचन किस प्रकार किया है ?

४) नंददासजी को `आन कवि गढिया - नंददास जडिया` ऐसा क्यों कहा जाता है ?

५) गोपियों ने ज्ञानी उद्धव को अपने तर्कों के माध्यम से किसप्रकार पराजित किया है ?

६) नंददासजी ने अपनी विरहिणी गोपियों का चित्रण `भँवरगीत` में किस प्रकार किया है ?

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में मैंने इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढने की कोशिश की है । इन उत्तरों को पाने के लिए उपर्युक्त प्रश्नों के आधार पर लघु शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा बनायी है ।

प्रथम अध्याय -

नंददासजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

द्वितीय अध्याय -

भ्रमरगीत परंपरा - परिचय ।

तृतीय अध्याय --

नंददास का `भँवरगीत` - परिचय ।

चतुर्थ अध्याय -

नंददास के भँवरगीत की गोपियाँ ।

उपसंहार -

इसप्रकार प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है ।

`प्रथम अध्याय` में मैंने नंददासजी का व्यक्तित्व एवं साहित्यिक कृतियों पर संक्षेप में विचार किया हैं। किसी भी कवि का व्यक्तित्व युग परिवेश से निर्मित होता हैं। कवि-व्यक्तित्व की निर्मिति में उस युग की विचारधाराओं एवं समकालीन परिस्थितिओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता हैं। नंददासजी का व्रज तथा संस्कृत पर समान प्रभुत्व होने के कारण उनके काव्य में दर्शन जैसा जटिल विषय भी सुलभ बन गया हैं।

`द्वितीय अध्याय` में मैंने भ्रमरगीत की परंपरा तथा उसका विकास आदि पर विचार किया हैं। भक्तिकाल से चली आई इस परंपरा में आधुनिक काल तक आते-आते बहुत परिवर्तन हुए हैं। `श्रीमद्भागवत` के दशमस्कंध का आधार लेते हुए भी इन कवियों ने अपनी प्रतिभाशक्ति तथा आसपास की स्थितियों के अनुसार इसमें परिवर्तन किये हैं। हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीत परंपरा के लिए महत्वपूर्ण स्थान हैं।

`तृतीय अध्याय` में मैंने नंददासजी के `भँवरगीत` का परिचय दिया हैं। नंददासजी ने अपने `भँवरगीत` के लिए `श्रीमद्भागवत` के दशमस्कंध का आधार लिया हैं। नंददासजी के दार्शनिक - विचारों पर वल्लभ-संप्रदाय की स्पष्ट छाप दिखाई देती हैं। उनका कला पक्ष अत्यंत सशक्त बन गया हैं।

`चतुर्थ अध्याय` मेरे लघु शोध-प्रबन्ध का मुख्य विषय हैं। इस अध्याय में मैंने नंददासजी के `भँवरगीत` की गोपियों की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट करने का प्रयत्न किया हैं। ये विरही गोपियाँ भावुक होने पर भी तार्किक अधिक हैं। वे सुन्दर तर्कों के माध्यम से निर्गुण का खण्डन और सगुण का मण्डन करती हैं। इसमें सूरदासजी के `भ्रमरगीत` की गोपियों से नंददासजी के `भँवरगीत` की गोपियों की तुलना की हैं।

`पाँचवे अध्याय` में उपसंहार हैं। यह प्रबन्ध के विषय का सार-रूप हैं।

प्रबन्ध के अंत में परिशिष्ट दिया गया है । परिशिष्ट के प्रारंभ में नंददासजी की रचनाओं की सूची दी गयी है । बादमें संदर्भ ग्रंथों और अन्य सहायक ग्रंथों की सूची दी गई है, साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशन एवं संस्करण भी दिया गया है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा कर्तव्य है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध आदरणीय गुरुवर्य प्राचार्य शरद कणबरकरजी के मार्गदर्शन में पूर्ण हुआ है । अपने कार्य में हमेशा व्यस्त रहते हुए भी आपने विषय की बारीकियों तथा कठिनाइयों को समझाया । मेरी समस्याओंका समाधान करते हुए मेरा अच्छी तरहसे पथ-प्रदर्शन किया । इसके लिए मैं आपके ऋण में रहना ही पसंद करती हूँ । आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद मेरे साथ रहेगा ।

आदरणीय पूज्य गुरुवर्य डॉ. व्ही.के.मोरे, प्रा.वेदपाठक, प्रा.श्रीमती भागवत,डॉ.द्रविड, प्रा.लिवलेजी का आशीर्वाद मेरे साथ रहा, मैं उनकी भी आभारी हूँ ।

अनुसंधान कार्य में प्रवृत्त करनेवाले प्राचार्य डॉ. आनंद पाटील, सांगली शिक्षण संस्था के सेक्रेटरी श्री आसगांवकर, श्रीराम हायस्कूल के श्री.मालीजी के प्रति भी मैं सक्रिय आभार प्रकट करती हूँ ।

मेरे माता-पिता,नाना-नानी, भाई-बहनों की भी मैं आभारी हूँ, जिनकी शुभकामनाएँ मुझे सदैव मिलती रहीं । साथ ही मेरे सहपाठी तथा सहेलियों को भी मैं धन्यवाद देती हूँ ।

प्रा.श्री. कडलासकरजी, प्रा.सौ. जाधवजी की भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने ग्रंथ उपलब्धि में मेरी निःस्वार्थ भाव से सहायता की ।

इस लघु शोध-प्रबन्ध के लिए आवश्यक ग्रंथों का लाभ मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से हुआ । अत: ग्रंथालय के पदाधिकारियों की मैं हृदय से आभारी हूँ ।

इस शोध-प्रबन्ध के टंकन को सुचारु रुप से पूर्ण करनेवाले श्री.बालकृष्ण रामचन्द्र सावंतजी ,कोल्हापुर के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ ।

प्रबन्ध को यथाशक्ति परिपूर्ण बनाने का मैंने प्रयास किया है । इससे विद्वज्जनों को यदि थोडा भी आनंद हुआ तो मैं अपने श्रम सार्थक हुए ऐसा समझूँगी ।

(कु. राऊत सविता पांडुरंग)
शोध-छात्रा ।

कोल्हापुर ।
दिनांक : : :१९९२ ।

..